Dr. Nayeb Ali
Assitt. Professor
Dept. of Political Science
Soghra College, Bihar Sharif.

B.A Part I - Political Science (Hons)

प्रथम - पत्र

राजनीति की उदारवादी और मार्क्सवादी विचारधारा

राजनीति का उदारवादी और मार्क्सवादी दृष्टिकोण राजनीतिक चिंतन के प्रारंभिक काल से लेकर आज तक राज्य और राजनीति के प्रति विभिन्न विचार और दर्शन प्रतिपादित किए गए हैं इन दर्शनों में प्रमुख स्थान उदारवादी दर्शन और मार्क्सवादी दर्शन का रहा है। उदारवादी विचारक इस तथ्य को मानते हैं कि व्यक्ति समाज में ही रह कर अपना विकास कर सकता है इसके विपरित, मार्क्सवादी दर्शन राजनीति को एक संघर्ष के रूप में देखता है

Liberal view of politics (- राजनीति का उदारवादी दृष्टिकोण :-

राजनीतिक चिंतन पर उदारवादी विचार धारा का प्रभाव 17वीं सदी से लेकर आजतक रहा है इन विचार धारा का प्रभाव सबसे अधिक पश्चिमी यूरोपीय देश और America पर रहा है जबकि well-furnished विकास England में हुआ है। आधुनिक युग में यह विश्व के अधिकांश देशों में राजनीति को प्रभावित करती रही है, यह जीवन का एक सम्पूर्ण दर्शन भी है। आज भी यह सबसे अधिक व्यापक और लोकप्रिय विचार धारा है। विश्व के अधिकांश राज्यों जैसे- America, England, Franc, Canada भारत, जर्मनी, इन्डोनेशिया आदि देशों में इस शासन प्रणाली में उदार लोकतांत्रिक व्यवस्था को अपनाया हुआ है

उदारवादी दर्शन का विकास — उदारवादी दर्शन को भलीभाँति समझने के लिए यह आवश्यक है कि इसे विकास क्रम की दृष्टि से दो भागों में बाँट दिया जाए, क्योंकि उदारवादी दर्शन के आज दो रूप दीखाई पड़ते हैं

1- Negative Liberalism
2- Positive Liberalism

Scanned with Cam

Negative Liberalism :- प्रारम्भ में उदारवाद सिर्फ मध्यम वर्ग, अर्थात व्यापारी वर्ग के हितों का दर्शन था सही अर्थ में यह यूरोप की दो महान क्रांतियों — सांस्कृतिक पुनर्जागरण और धर्म सुधार का परिणाम था। 17वीं सदी में Hobbs और Lock के राजनीतिक चिंतन के साथ इसका उदय हुआ। Loc ने इस उदारवादी दर्शन को आगे बढ़ाया

Positive Liberalism :- 1860 ई० तक परिस्थितियाँ काफी बदल गई थी। आर्थिक क्षेत्र में अहस्तक्षेप की नीति के अपनाने के चलते श्रमिक वर्गों की स्थिति बहुत बुरी होने लगी थी, अधिकांश लोग 'अमानवीय दशा' के नाम से पुकारने लगे थे। दार्शनिकों ने मज़दूरों और पूँजीपतियों द्वारा किए जा रहे अत्याचारों की ओर आम जनता का ध्यान आकर्षित करना प्रारम्भ कर दिया इस प्रकार ना सिर्फ आदर्शवादियों ने इसकी आलोचना की, वरन कार्ल मार्क्स और इसके समर्थकों द्वारा भी इस पर तबल प्रहार किए गए। J. S. Mill ने अपनी विचार धारा का शुरुआत एक परंपरागत उदारवादी के रूप में किया था लेकिन जल्द ही उसने अनुभव किया कि जनसाधारण के लिए उचित प्रकार की सामाजिक स्थितियाँ विद्यमान होने पर ही व्यक्तियों की स्वतंत्रता की रक्षा संभव है अतएव उसने इस बात पर बल दिया की राज्य के द्वारा उचित वेतन, सभी के लिए शिक्षा की व्यवस्था और समानता की स्थापना के लिए प्रयास किया जाना चाहिए

Main Features of Liberal Philosophy :- आधुनिक उदारवाद 'साकारात्मक राज्य' की धारणा का प्रतिपादन करता है। यह परम्परागत उदारवाद की भाँति आर्थिक क्षेत्र में ('अहस्तक्षेप') के सिद्धांत को स्वीकार नहीं करता इस असमानता के बावजूद उदारवादी दर्शन के कुछ मूलभूत लक्षण हैं जिन्हें परंपरागत एवं आधुनिक उदारवाद में समान रूप से देखा जा सकता है For example :- (i) व्यक्ति प्रधान दर्शन — उदारवादी दर्शन का केन्द्रीय तत्व व्यक्ति है (ii) मानवीय विवेक में विश्वास — उदारवाद मानवीय विवेक और बुद्धि में अपनी आस्था व्यक्त करता है (iii) व्यक्ति साध्य तथा समाज और राज्य साधन है — उदारवादी व्यक्ति को साध्य मानकर ही अपनी दिशाओं में आगे

Scanned with Cam

(iv) धर्म निरपेक्ष राज्य का आदर्श — उदारवादी दृष्टिकोण धर्म निरपेक्ष राज्य के आदर्श में विश्वास करता है इसके अनुसार राज्य का कोई धर्म नहीं होना चाहिए। राज्य द्वारा अपने सभी नागरिकों को धार्मिक स्वतंत्रता दी जानी चाहिए

(v) राजनीति की उत्पत्ती सामाजिक विविधताओं में होती है।

(vi) मानवीय स्वतंत्रता और अधिकारों में अटूट विश्वास।

(vii) लोकतंत्र और लोकतांत्रिक पद्धति में अटूट विश्वास — प्रकट करता है। लोकप्रिय संप्रभुता इसका आधार है।

(viii) अन्तरराष्ट्रीय और विश्व शांति का समर्थन —

(ix) कानून की सर्वोच्चता का प्रतिपादन — उदारवाद शासकीय स्वेच्छाचारिता का विरोध करता है और शासन में व्यक्ति के स्थान पर Law की सर्वोच्चता के सिद्धांत का प्रतिपादन करता है उदारवाद जनता को अत्याचारी शासन के विरुद्ध विद्रोह करने का अधिकार देता है

(x) राज्य के कार्यक्षेत्र में उदारवादी सोच अनावश्यक विस्तार नहीं चाहता है।

(xii) Man is a Social :- उदारवादी व्यक्ति को एक समाजिक प्राणी मानते हैं।

(xiii) समाज का आधार उदारवादी प्रतिस्पर्धा मानते हैं।

(xiv) व्यक्ति और समाज के हित में सामंजस्य आवश्यक है — उदारवादीयों की सोच है कि समाज में व्यक्तियों द्वारा सहयोग तथा मेलजोल को बनाए रखने के लिए इस सिद्धांत को अपनाना

(xv) राजनीति समाज में व्यवस्था तथा सामान्य हितों की सुरक्षा का अध्ययन है

(xvi) राजनीति शांतिपूर्ण तरीकों से समाजिक परिवर्तन लाने की प्रक्रिया है

(xvii) खुली बातचीत और बौद्धिक सहयोग उदारवादी राजनीति का सिद्धांत है

Scanned with Cam

उदारवादी विचारधाराओं का आलोचकों द्वारा आलोचनाएं भी हुई है। जैसे!-

(1) आर्थिक आधार पर आलोचना नव उदारवादी भी पूंजीवाद का ही राजनीतिक दर्शन है Laski के अनुसार उदारवाद ने निर्धन वर्ग को हमेशा इस नजरिये से देखा है मानो, जीवन में सिर्फ अपनी गलतियों के वजह से ही वह गरीब है।

(2) उदारवादी दर्शन लोक कल्याणकारी राज्य की धारणा पर आधारित नही है।

(3) क्रमिक परिवर्तन के सुधारवादी मार्ग असंतोषप्रद - आलोचकों की राय में उदारवादी राजनीति ऐसा रुढ़िवादि तथा यथास्थितिवादि दर्शन है जिसके पास आधुनिक युग की समस्याओं का कोई सामाधान नही।

निष्कर्ष के रूप में तथ्यों के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि राजनीति का उदारवादी दर्शन संकट की घड़ी से गुजर रहा है। आज इसका प्रभाव world के सिर्फ एक तिहाई राज्यों में रह गया है। आज इसे साम्यवादी और फॉसीवादी विचारधारओं की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है आज विश्व के अधिकांश देशों ने साम्यवाद को अपना लिया है और इस प्रकार उदारवादि देशों में सरकारें लड़खड़ा रही हैं। सिद्धांत में अन्तर्निहित दोषों तथा परिवर्तित परिस्थितियों के चलते उदारवादी राजनीति के दावे गलत सिद्ध हो चुके हैं परिणामस्वरूप, आज यह मांग की जा रही है कि उदारवाद की मूल धाराओं में परिवर्तन लाया जाए आज का उदारवाद बदली हुई परिस्थितियों में समाजवाद और मार्क्सवाद की चुनौती के सम्मुख एक विशिष्ट विचारधारा के रूप में बना रहेगा या नहीं, यह भविष्य के लिए एक बड़ा प्रश्नचिन्ह है।

Scanned with Cam

राजनीति का मार्क्सवादी दृष्टिकोण
Marxist View of Politics

राजनीति के मार्क्सवादी दृष्टिकोण के हिमायती कार्ल मार्क्स हैं जो पश्चिमी राजनीतिक विचारधारा के महान चिन्तकों में एक है। विद्वानों ने मार्क्स को आधुनिक युग का प्रथम वैज्ञानिक समाजवादी या वैज्ञानिक समाजवाद का जनक कहकर पुकारा है मार्क्स एक क्रांतिकारी चिंतक है जो आधुनिक सभ्यता को समाप्त कर नए समाज की स्थापना चाहता है। मार्क्स पश्चिम की उदारवादी राजनीतिक विचारधारा के सर्वथा विपरीत विचार रखता है। वह राजनीति को एक संघर्ष के रूप में देखता है "विश्व के मजदूरो एक हो जाओ" — मार्क्स के इस उद्घोष ने पूर्वी यूरोप के विभिन्न देशों में सोवियत रूस, चीन, वियतनाम, क्यूबा इत्यादि देशों में एक नवीन व्यवस्था को जन्म दिया है

मार्क्सवादी दृष्टिकोण क्या है — राजनीति के मार्क्सवादी दृष्टिकोण का उदय कार्ल मार्क्स के दो ग्रन्थों — (i) साम्यवादी घोषणा पत्र (ii) पूँजी में अभिव्यक्त विचारों का परिणाम है। लेकिन अब मार्क्सवादी दृष्टिकोण ने विभिन्न आयामों वाली एक व्यापक धारणा का रूप ले लिया है जिसकी गहराई में प्रवेश के लिए एंजिलस, लेनिन, बुखारिन, स्टालिन, ग्राम्सी माओ इत्यादि के साथ-साथ यूरोपीय साम्यवाद, ट्रॉट्स्की द्वारा अभिव्यक्त विचारों को भी समझना होगा। मार्क्स के अनुसार समाज में व्यक्ति अकेले नहीं होते, वरना वे अपने जैसे

Scanned with CamScanner

समुदाय के संदर्भ होते हैं मार्क्सवादी दृष्टिकोण के अनुसार, भूतकालीन तथा आज की समाज व्यवस्था में स्पष्ट रूप से दो वर्ग विद्यमान हैं। उनमें जो वर्ग उत्पादन के साधनों का स्वामी है उसे पूंजीपति-वर्ग कहा जाता है। दूसरा वर्ग ऐसा है जिनके पास सिर्फ अपना श्रम है और इस वर्ग को सर्वहारा-वर्ग के नाम से पुकारा जाता है इन दोनों वर्गों में अनवरत संघर्ष की स्थिति बनी हुई है। यह अनवरत संघर्ष ही वर्ग-संघर्ष की स्थिति है।

राजनीति सामाजिक प्रक्रिया का एक पक्ष है — मार्क्स इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या द्वारा राज्य और राजनीति के बदलते स्वरूपों की चर्चा करता है

मार्क्सवादी दृष्टिकोण का विशेष लक्षण — राजनीति के मार्क्सवादी दृष्टिकोण की प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन हम निम्नलिखित रूपों में कर सकते हैं।

① मार्क्सवादी दृष्टिकोण व्यक्ति पर समग्र सामाजिक संबंधों के सन्दर्भ में विचार करता है। — व्यक्ति की सामाजिक प्रकृति को स्वीकार कर मार्क्सवाद यह मानता है कि सामाजिक परिवेश के सन्दर्भ में ही व्यक्ति को समझा और जाना जा सकता है। मार्क्स व्यक्तिगत हित और सामाजिक हित में कोई अन्तर नहीं करता।

② समाज-व्यवस्था का आधार व्यक्ति नहीं, वरन वर्ग है — मार्क्स के विचार में समाज की व्याख्या के लिए आधारभूत इकाई व्यक्ति नहीं, वर्ग है और समाज इन वर्गों का समग्र रूप है। समाज का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास रहा है। हर युग में दो परस्पर विरोधी वर्ग पाए जाते हैं। उन वर्गों का आपसी संघर्ष से ही उस युग का निर्माण होता है। मार्क्स समाज को एक विकास उन्मुख निकाय के रूप में देखता है।

Scanned with Cam

(3) आर्थिक व्यवस्था राजनीति और समस्त व्यवस्था का निर्णायक तत्व है
मार्क्सवादी विचारधारा के अनुसार, राजनीति और समस्त व्यवस्था उत्पादन - प्रक्रिया और आर्थिक तत्वों से संचालित होती है। उत्पादन की इस प्रक्रिया में निरंतर विकास होता रहता है। उत्पादन की व्यवस्था में होनेवाली परिवर्तनों के चलते ही सारी व्यवस्था में परिवर्तन होता है। मार्क्सवादी नजरिये की मान्यता है कि प्रत्येक युग की समस्त सामाजिक व्यवस्था पर उसी वर्ग का आधिपत्य होता है जिसे उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व प्राप्त हो। वर्तमान समय में पूँजीपतियों ने अपनी धन-संपदा के बल पर राजनीति और राजनीतिक व्यवस्था पर आधिपत्य स्थापित कर लिया है। और इस प्रकार राजनीति संपत्तिशाली वर्ग की दासी हो गई है।

(4) वर्ग-संघर्ष इतिहास की कुंजी है – मार्क्स इतिहास की अनिवार्यता में विश्वास करता है। इतिहास में परिवर्तन का दूसरा नाम 'क्रांति' है इनके अनुसार समाज का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है। अपनी प्रसिद्ध कृति साम्यवादी घोषणा में मार्क्स ने लिखा है कि "अब तक के समस्त मानव समाज में वर्ग संघर्ष का इतिहास रहा है। स्वतंत्र व्यक्ति तथा दास, अमीर तथा सामान्य जन, भूस्वामी तथा भूदास, श्रेणीपति तथा दस्तकार, संक्षेप में उत्पीड़क तथा उत्पीड़ित निरंतर एक दूसरे का विरोध करते हैं। तथा अनवरत कभी छुप छिप कर तथा कभी खुलकर संघर्ष चलाते रहते हैं।

स्पष्ट है कि कार्ल मार्क्स के समस्त चिंतन में वर्ग संघर्ष ही मूलभूत तत्व है।

(5) राज्य और शासन शोषण के यंत्र हैं – Plato, Aristotal एवं अन्य विचारकों के अनुसार राज्य एक स्वाभाविक और नैतिक संस्था है। जो मानव-जीवन के साथ जुड़ी हुई है इसके विपरीत, मार्क्स राज्य को एकवर्गीय संस्था मानता है राज्य का उदय वर्ग-विभेद के चलते हुआ है। और राज्य संस्था हमेशा ही शोषक वर्ग के सहायक के रूप में कार्य करती रही है।

Scanned with Cam

8

(6)- मार्क्सवादी दृष्टिकोण क्रांतिकारी पद्धति में विश्वास करता है। — मार्क्स लोकतांत्रिक संस्थाओं को 'अमीरों की संस्थाएँ' कहकर उनका उपहास करता है वह कहता है कि लोकतांत्रिक प्रणाली से श्रमिकों के हितों की पर्याप्त रक्षा नहीं हो सकती। यह क्रांतिकारी राजनीति में विश्वास करता है उसके विचार में पूँजीपतियों द्वारा निरंतर शोषित रहने से श्रमिकवर्ग में क्रांतिकारी भावनाएँ उत्पन्न हो जाति है

(7)- राजनीति आर्थिक शोषण का साधन है — मार्क्सवादी राजनीति के दो चरणों पर विचार करते हैं।

(i) क्रांति से पहले की राजनीति (ii) क्रांति के बाद की राजनीति

क्रांति से पहले की राजनीति शोषण का साधन है। समाज में हमेशा एक वर्ग शक्तिशाली होता है और दूसरा वर्ग कमजोर। शक्तिशाली वर्ग के नियंत्रण में उत्पादन के साधन रहते हैं इस रसूक के वजह कर बुद्धि-जीवियों को खरीद लेता है और इस प्रकार राजनीति को अपने शोषण का साधन बना लेता है

(8)- राजनीति सामाजिक पुर्नस्थापना का साधन है — मार्क्सवादी विचार धारा के अनुसार, पूँजीवादी समाज में राजनीति का रूप अ-राजनीतिक (Antipolitics) होता है

(9)- सर्वहारा क्रांति के बाद श्रमजीवी तानाशाही की स्थापना — सर्वहारा क्रांति के बाद श्रमजीवी तानाशाही की स्थापना होती है ऐसे संक्रमणकाल में राजनीति बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है

आलोचनाएँ — राजनीति के प्रति मार्क्सवादी दृष्टिकोण की आलोचनाएँ निम्न आधार पर की गई हैं—

(i) वर्ग-संघर्ष राजनीति का केन्द्रीय तत्व नहीं है। यह सत्य है क्योंकि धर्म, सत्ता के लिए संघर्ष और शासकवर्ग की महत्वाकांक्षाएँ आदि तत्व राजनीति में वर्ग-संघर्ष की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

(ii) राज्य के प्रति मार्क्सवादी दृष्टिकोण स्वीकार योग्य नहीं है राजनीति में सामान्य विचार यही है कि राज्य और शासन शोषण के यंत्र नहीं बल्कि मानव-जीवन को अव्यवस्था के दलदल से बाहर निकालकर व्यवस्था उत्पन्न करने में संलग्न शाश्वत संस्थाएँ हैं।

(iii) हिंसा और बल-प्रयोग का परिणाम अराजकता हो सकती है आलोचकों की राय में इस तरह की पद्धति अपनाने में पूँजीवाद का अन्त साम्यवाद में न होकर ऐसी अराजकता में भी हो सकता है। पॉपर ने भी लिखा है "व्यावहारिक राजनीति के दृष्टिकोण से हिंसात्मक क्रांति की सलाह देना मार्क्सवाद का संभवतः सबसे अधिक हानिकारक मत है।

Scanned with Cam